व्याख्या

प्रबोधन तथा आधुनिक युग पुनर्जागरण

1. (d) इटली से प्रस्फुटित होकर धीरे-धीरे पुनर्जागरण प्रथमतः सम्पूर्ण यूरोप में, फिर सम्पूर्ण विश्व में फैल गया। पुनर्जागरण के कारणों में सामन्तवाद का पतन, व्यापार वाणिज्य के पुनरुत्थान तथा धार्मिक युद्ध थे। धर्मयुद्धों जो येरुशेलम को लेकर ईसाई धर्म तथा मुस्लिम वर्ग के मध्य लड़ी गई थी, ने यूरोपवासियों का पूर्व के लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ाया जो उस समय ज्ञान के प्रकाश से आलोकित थे। व्यापारिक समृद्धि के फलस्वरूप, समाज में एक शक्तिशाली तथा साधन-सम्पन्न वर्ग का उदय हुआ। बाइजेंटाइन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया का 1453 ई. में पतन हो गया। यहां के बुद्धिजीवी, कलाकार तथा कारीगर इटली, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड में जाकर बस गए जहां पर इनके द्वारा ज्ञान-विज्ञान का खूब प्रचार किया गया। मंगोल शासक चंगेज खां के वंशज कुबलाई खां द्वारा अपने दरबार में देश-विदेश के विद्वानों तथा व्यापारियों के सभा करने से संकुचित मानसिकता का अंत हुआ।

2. (b) वर्तमान में इटली की राजधानी रोम पुनर्जागरण काम में इटली का ही एक नगर था, इसलिए यहां पर पहले से ही प्राचीन रोमन संस्कृति व्याप्त थी। फलस्वरूप, पुनर्जागरण की प्रेरणा प्राचीन रोम से ही मिली थी। उस समय ईसाई धर्म का केन्द्र तथा पोप का निवास-स्थल रोम ही था। आर्थिक दृष्टिकोण से सम्पन्न इटली के लोगों में सांस्कृतिक पुनरुत्थान की प्रबल भावना का उदय हुआ।

3. (a) पुनर्जागरण काल में इटली के प्रसिद्ध कवि दांते तथा साहित्यकार मैकियावली, पेट्रार्क आदि ने भी मानवतावादी मूल्यों की प्रतिष्ठा स्थापित करने में अपना यथेष्ट योगदान दिया। पेट्रार्क को तो मानवतावाद का संस्थापक माना जाता है। मैकियावली ने अपनी कृति 'द प्रिंस' में स्पष्ट रूप से राज्य को स्वतंत्र व सर्व-सत्ता-सम्पन्न माना तथा धार्मिक एवं राजनीतिक मसलों को एक-दूसरे से पृथक रखने की सलाह दी।

4. (b) पुनर्जागरण की मान्यताओं का सर्वाधिक प्रचार करने वाला साहित्यकार एरासमस ने अपनी पुस्तक 'प्रेज ऑफ फॉली' (मूखर्ता की प्रशंसा) के माध्यम से चर्च की बुराइयों पर खुलकर प्रहार किया था। ब्रिटेन के साहित्यकार टॉमस मूर ने अपनी रचना, यूटोपिया में मानवतावादी आदर्श राज्य की व्याख्या की।

5. (c) आधुनिक काल के विज्ञान पुनर्जागरण काल की ही देन है। पोलैंड निवासी कोपरनिकस ने यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है तथा पृथ्वी खगोलीय संरचना के केन्द्र में स्थित नहीं है। कोपरनिकस के इस निष्कर्ष की पुष्टि गैलीलियों ने दूरबीन नामक वैज्ञानिक उपकरण की खोज कर संभव कर दी। कोपरनिकस के इस सिद्धान्त के प्रचार के आरोप में 1600 ई. में ज्यार्दानो ब्रूनो को चर्च ने जिंदा आग में झोंक दिया।

प्रबोधन युग

6. (d) प्रबोधन युग में जिन साहित्यों का सृजन हुआ, उनकी शैली विश्लेषणात्मक थी तथा सम्पूर्ण साहित्य आशावादी विचारों व तथ्यों से भरा था। इस युग के साहित्य ने समाज को जागृत करने, विकसित करने, विचारों में निर्भिकता, ताजगी और स्वाभिमान को समाविष्ट करने का प्रयत्न किया। इस युग के प्रमुख विचारकों ने अपनी-अपनी लेखन के माध्यम से समाज को जागृत किया। ये निम्न थे—पेरे बैली, मॉन्टेस्क्यू, वाल्टेयर, रूसो, दिदरो, क्वेसने, जॉन लॉक, कॉण्ट तथा एडम स्मिथ।

7. (d) 18वीं सदी के फ्रांस के प्रबुद्ध दार्शनिक रूसो का जन्म 1712 ई. में जेनेवा में हुआ था। उसकी तीन प्रमुख रचना इस प्रकार हैं—डिस्कोर्सेज ऑन साइंस एण्ड आर्ट्स, द एमिल तथा द सोशल कॉन्ट्रेक्ट। रूसो ने अपनी इन रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज को प्राकृत की ओर लौटने की बात कही। उसका कहना था कि 'किसी व्यक्ति को इतना धनी नहीं होना चाहिए कि वह दूसरे व्यक्ति को खरीद ले।' उसके विचार समाज में इतने प्रभावशाली थे कि फ्रांस के नेपोलियन बोनापार्ट को भी यह कहना पड़ा कि 'यदि रूसो का जन्म न होता, तो फ्रांस में राज्यक्रांति का होना असंभव था।'

8. (a) प्रबोधन युग में अपनी लेखन के माध्यम से महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने वालों में क्वेसने

अर्थशास्त्रियों का नेता था तथा एडम स्मिथ एक स्कॉटिश अर्थशास्त्री था। मॉन्टेस्क्यू फ्रांस का प्रसिद्ध विचारक, तत्ववेत्ता तथा इतिहासकार था। पेरे बैली, रूसो, दिदरो फ्रांस के दार्शनिक थे। जॉन लॉक अंग्रेज दार्शनिक था, कॉण्ट एक जर्मन विचारक तथा दार्शनिक था। वाल्टेयर अठारहवीं शताब्दी का एक फ्रांसीसी लेखक था। यह एक महान कवि, दार्शनिक, नाटककार, आलोचक, पत्रकार तथा व्यंग्यकार भी था।

9. (a) कॉण्ट नैतिकता को ही मनुष्य की पूर्णता का मापदण्ड मानता था। उसका मानना था कि बुद्धि केवल अनुभव जन्य ज्ञान तक सीमित होती है। उसने बौद्धिक क्रांति को एक आदर्श वाक्य दिया: 'स्वयं अपनी समझ का उपयोग करने का साहस करो।' कॉण्ट की तीन कृतियां, जिसके कारण वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर सका है: शुद्ध बुद्धि मीमांसा (Critique of Pure Reason), व्यावहारिक मीमांसा (Practical Reason) तथा न्याय (Judgement)।

10. (a) प्रबोधन काल के प्राय: सभी विचारकों ने विश्व के मशीनीकृत स्वरूप को स्वीकार किया। उन्होंने यह सिद्धान्त स्थापित किया कि 'विश्व एक प्राकृतिक नियम के तहत कार्य करता है।' उन्होंने यह कहा कि 'एक बार प्रकृति का निर्माण हो जाने के बाद कोई अज्ञात सत्ता उसके नियमों का संचालन नहीं करती, बल्कि उनका संचालन प्राकृतिक नियमों से होता है, जो शाश्वत एवं अपरिवर्तनीय है।'

11. (a) प्रबोधनकालीन अंग्रेज दार्शनिक जॉन लाक ने अपने विचारों में यह स्पष्ट किया कि सरकार को जनता के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। सरकार अच्छी है या बुरी इस बात की सर्वोत्तम निर्णायक जनता है। उसने सम्पत्ति के संदर्भ में यह स्पष्ट किया कि यह एक प्राकृतिक अधिकार है जिसका उपभोग मनुष्य राज्य के जन्म से पूर्व की प्राकृतिक अवस्था में करता था। वर्तमान में इसका महत्त्व यह है कि यह सरकार की शक्तियों के ऊपर एक सीमा है। सरकार को यह अधिकार नहीं है कि वह जनता के इच्छा के बिना उसकी सम्पत्ति का हरण कर ले।

धर्म-सुधार आन्दोलन

12. (c) यूरोपीय पुनर्जागरण के धार्मिक जीवन में प्रभाव धर्म-सुधार आन्दोलन के रूप में सामने आए। पुनर्जागरण से पहले यूरोप में कैथोलिक चर्च का एकछत्र प्रभाव था। धर्म सुधार आन्दोलन ने कैथोलिक चर्च की बुराइयों को उजागर करते हुए एक सम्प्रदाय-प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय को स्थापित किया तथा फिर कैथोलिक चर्च ने आत्मनिरीक्षण के लिए प्रति-धर्म-सुधार आन्दोलन चलाया।

13. (c) प्रोटेस्टेण्ट धर्म-सुधार आन्दोलन की शुरुआत 1517 ई. में जर्मनी के विटेनबर्ग विश्वविद्यालय के धर्मशास्त्र के शिक्षक मार्टिन लूथर किंग द्वारा किया गया था। यद्यपि, धर्मसुधार की पृष्ठिभूमि 14वीं सदी के अंत में ही ब्रिटेन में बनने लगी थी। मार्टिन लूथर ने कैथोलिक धर्म द्वारा बेचे जा रहे पापविमोचन पत्रों (क्षमापत्रों) के विरुद्ध '95 Thesis' प्रस्तुत कर कैथोलिक चर्च की सार्वभौम सत्ता को खुली चुनौती दी। लूथर को सक्सोनी के शासक ने पूर्ण संरक्षण प्रदान किया। जर्मनी के शासक एवं जनता दोनों ने मार्टिन लूथर का समर्थन किया था।

14. (c) धर्म-सुधार आन्दोलन के एक प्रमुख नेता ड्विंगली स्विट्जरलैंड का निवासी था। उसने अपने देश की गणतांत्रिक पद्धति के आधार पर धर्म को नए ढंग से परिभाषित किया तथा 1525 ई. में रोम से अलग 'रिफॉर्म्ड चर्च' की स्थापना की। परन्तु ड्विंगली का प्रभाव केवल स्विट्जरलैंड के नगरों तक ही सीमित रहा। इसके अतिरिक्त फ्रांस के काल्विन ने धर्म-सुधार आन्दोलन के समय अपना कार्यक्षेत्र स्विट्जरलैंड को ही बनाया।

15. (d) ब्रिटेन में धर्म-सुधार आन्दोलन की परिणति राष्ट्रीय चर्च की स्थापना के रूप में हुई। इसकी शुरुआत हेनरी सप्तम के काल में हुई थी जो राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत था तथा कैथोलिक मत में आस्था रखते हुए पोप की सर्वोच्चता से नाखुश था। उसने ब्रिटेन के संसद में कानून पारित करवाकर रोम से इंग्लैंड के चर्च का सम्बन्ध समाप्त कर दिया तथा सम्राट को ब्रिटेन के चर्च का सर्वोच्च अधिकारी घोषित कर दिया। उसके द्वारा ब्रिटेन में